REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

भारत–पाक सम्बन्ध (1947–1972) एक पुर्नअध्ययन

अर्जुन बैंठा
शोधकर्ता , इतिहास विभाग , मगध विश्वविद्यालय, बोधगया.

प्रस्तावना :

भारत विभाजन भरतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष का एक दुःखद प्रकरण है। जबकि भारत और पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति तथा सुरक्षा, आर्थिक विकास एवं जनकल्याण की आवश्यकता इस बात पर बल देती है कि दोनों देशों को मैत्री एवं सद्भावना के वातावरण में रहकर परस्पर अच्छे पड़ोसी का वर्ताव करना चाहिए। परन्तु पाकिस्तान के निर्माण काल से वर्तमान समय तक भारत के साथ इसके संबंध मैत्रीपूर्ण नहीं हो सके। ''जनवरी 1948 को भारत ने सुरक्ष परिषद् को यह जानकारी दी कि पाकिस्तान कश्मीर पर आक्रमण करने वाले छापामारों की सहायता कर रहा है। पाकिस्तान ने इन तथ्यों से स्पष्ट इन्कार कर दिया और तब सुरक्षा परिषद् ने भारत और पाकिस्तान के लिए एक आयोग की नियुक्ति की। इस आयोग ने 13 अगस्त 1948 को एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इसमें युद्ध विराम का प्रस्ताव था। भारत के साथ अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने की दिशा में पाकिस्तान ने 1971 में सशस्त्र संघर्ष का मार्ग अपनाया। इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र, मध्यस्थता एवं न्यायाधिकरण के माध्यम से भी समस्याओं के समाधान की कोशिश की गयी। इन समस्त प्रयासों के बावजूद भारत और पाकिस्तान के बीच स्थायी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सके।

1. ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों देशों के बीच कटुतापूर्ण संबंध होने के मुख्यतः दो करण हो सकते हैं। प्रथम, देश का विभाजन बड़ी जल्दबाजी में किया गया। द्वितीय, विभाजन के आधार की व्याख्या दोनों देशों में भिन्न–भिन्न ढंग से की गयी। मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्ना ने देश विभाजन का आधार द्विराष्ट्र सिद्धांत बताया। भारतीय नेताओं ने द्विराष्ट्र के सिद्धान्त को कभी दिल से नहीं स्वीकारा लेकिन देश को आजाद कराने के लिए परिस्थितिवश बाध्य होकर देश के विभाजन के प्रस्ताव को मान लिया गया। वस्तुतः हम यह भी कह सकते हैं कि सन् 1947 में भारत का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ। जहाँ–जाहाँ मुस्लिम आबादी वाले प्रान्त थे, वे पाकिस्तान को दिए गए चाहे वह सिंध था या बलुचिस्तान अथवा चाहे वह उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रान्त हो। जहाँ–जहाँ आधी जनसंख्या मुसलमानों की थी, उसे दो भागों में बांट गया। मुस्लिम भाग पाकिस्तान को दिया गया तथा शेष भाग भारत को दिया गया। ऐसा विभाजन पंजाब और बंगाल का भी हुआ। फलतः पाकिस्तान एक इस्लामी देश बना। परिणामस्वरूप पश्चिमी एशिया के देशों के साथ उसका संबंध घनिष्ठ होना

स्वाभाविक था। भारत इसी नीति के काट के लिए अरब समर्थक नीति का अनुगमन करना पड़ा। भारत को अरब समर्थक नीति का संचालन राष्ट्रीय हित के सम्बर्धन के लिए भी करना पड़ा। भारत को तेल इसी क्षेत्र से प्राप्त होता है। भारत के निजी और लोक उद्यम इस क्षेत्र में कार्यरत है। वे वहां पर निर्माण कार्य में व्यस्त हैं। साथ ही भारत के लाखों इन्जीनियर, तकनीकी विशेषज्ञ, मिस्त्री तथा मजदूर इन देशों में कार्यरत हैं। इससे भारत को पर्याप्त मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। पाकिस्तान भारत के विरूद्ध इन देशों से धर्म के आधार पर लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते रहा है। फलतः

भारत को भी अरब पक्षधर नीति का पालन करते रहना पड़ा है।

2. भारत पाक संबंधों में तनाव का एक अन्य कारण पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति भी रही है। पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान इन दोनों भागों के बीच मध्य विशाल भारतीय क्षेत्र है। पाकिस्तान ने कश्मीर में जनमत संग्रह पर विशेष बल दिया और भारत का ध्यान 1953 के समझौतों की ओर आकर्षित कर जनमत संग्रह को आवश्यकता बताया। ''जबकि जलमत संग्रह के संबंध में पंडित नेहरू ने यह स्पष्ट तौर पर बताया कि यदि पाकिस्तान को अमेरिका से मिलने वाली शस्त्र सहायताओं पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया तो अगस्त 1953 का जनमत संग्रह से संबंधित समझौता असफल हो जाएगा। 1957 में कश्मीर विवाद को पाकिस्तान द्वारा पुनः सुरक्षा परिषद् में लाया गया और जनमत संग्रह को प्राथमिकता दी गयी। दूसरी ओर भारत ने यूनाइटेड नेशन्स कमीशन फॉर इण्डिया एण्ड पाकिस्तान के प्रस्तावों के प्रथम दो भागों को क्रियान्वित करने के बाद ही जनमत संग्रह को सम्भव बताया।

3. द्वितीय विश्वयुद्ध के भय से ही अमेरिका विश्व की शक्तिशाली सत्ता के रूप में उभर कर आ रहा था। वह एशिया में नई शक्तियाँ भारत तथा पाकिस्तान के प्रति सजग था। भारत और पाकिस्तान की परिस्थितियाँ भिन्न–भिन्न थी। भारत अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण रूस के विरोध में नहीं जा सकता था, लेकिन आर्थिक विकास के लिए अमेरिकी सहयोग भी आवश्यक था। इस स्थिति में भारत ने अमेरिका तथा रूस से समान स्तर पर संबंध स्थापित रखने का प्रयास कर गुटनिरपेक्षता की नीति का प्रतिपादन किया। जबकि अमेरिका चाहता था कि भारत स्पष्ट रूप से उसका साथ दें। ''उपमहाद्वीप में भारतीय नीति को सन्तुलित करने के लिए अमेरिकी नेताओं ने पाकिस्तान की ओर विशेष ध्यान दिया।'' पाकिस्तान भी रूसी साम्यवाद के भय से अमेरिका का समर्थन प्राप्त करने को उत्सुक था। आन्तरिक रूप से अमेरिकी प्रशासन ने सैनिक सहायता का औचित्य सिद्ध करने के लिए एक नया तर्क दिया पाकिस्तान को हथियार इसलिए दिए जा रहे थे कि रूस की गतिविधियों पर निगाह रखने के लिए पाकिस्तान स्थित यू–2 गुप्तचर अड्डे का उपयोग किया जा सके। ऐसा करना अमेरिकी सुरक्षा के लिए अत्यावश्यक था।'' 1949 में चीनी गणराज्य की स्थापना के बाद अमेरिका को चीन से साम्यवाद के प्रसार का खतरा महसूस हुआ। भारत ने जब चीन को संयुक्त राष्ट्र में सम्मिलित करने का प्रस्ताव दिया तो पाकिस्तान ने अमेरिका की नीतियों का समर्थन किया। इस समर्थन का मुख्य उद्देश्य भारत–अमेरिका संबंधों में तनाव पैदा करना था। अक्टूबर 1962 में चीन ने जब भारत पर आक्रमण किया तोपाकिस्तान ने भारत को दी जाने वाली अमेरिकी और ब्रिटिश सहायता की आलोचना की और तर्क दिया कि भारत इन शस्त्रों का प्रयोग पाकिस्तान के विरूद्ध कर सकता है। जबकि नेहरू जी ने अयूब खाँ को पत्र लिखकर यह आश्वासन दिया कि इन हथियारों का प्रयोग चीन के साथ मात्र प्रतिरक्षा के तौर पर किया जायेगा। दिसम्बर 1962 में पाकिस्तान में यह घोषणा कर दी गयी कि चीन और पाकिस्तान एक सीमा समझौता पर सिद्धान्तः सहमति व्यक्त की गयी है जिसके अनुसार पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का लगभग 2,200 वर्गमील क्षेत्र चीन को मिलेगा। पाकिस्तान को दी जाने वाली सहायता तथा पाकिस्तान की ओर से संभावित चीनी हस्ताक्षेप ने रूस को अधिक चिन्तित कर दिया। ऐसी स्थिति में भारत की पराजय निश्चित थी और चीन के बढ़ते हुए प्रभाव का स्वरूप भी निश्चित था। ऐसी स्थिति में सोवियत भारत की परम्परिक मैत्री को ध्यान में रखते हुए सोवियत रूस ने युद्ध विराम और मध्यस्थता का प्रस्ताव दोनों देशों को भेजा। इसी पृष्ठभूमि में चीन एवं अमेरिका के घेर से पाकिस्तान को अलग करना भी सोवियत रूस का महत्वपूर्ण उद्देश्य था। सोवियत संघ का प्रस्ताव मुख्यतः दो कारणों से भी उल्लेखनीय रहा। प्रथम, राष्ट्रीय हित तथा द्वितीय, अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति सन्तुलन। वस्तुतः कश्मीर का संघर्ष सोवियत सरकार की व्याकुलता बढ़ा देता है। यह संघर्ष ऐसे क्षेत्र में घटित हो रहा था। जो सोवियत संघ की सीमाओं के प्रत्यक्ष सन्निकट है। इस क्षेत्र में शांति तथा राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिरता के साथ भारत–पाकिस्तान में सामान्य मैत्रीपूर्ण संबंध प्रकट रूप से सोवियत हित में था। दूसरे तथ्य की गंभीरता को भी इंकार नहीं किया जा सकता है। संपूर्ण विश्व में महाशक्तियों का शक्ति सन्तुलन रूस के पक्ष में हो सके इसके लिए आवश्यक था कि रूस एशिया की राजनीति में अधिकाधिक रूचि ले एवं भारतीय उपमहाद्वीप को बाह्य शक्तियों के प्रभाव एवं हस्तक्षेप से मुक्त रखने में सफलता प्राप्त करे। यही नहीं वह अपनी कूटनीतिक शैली से अमेरिका के प्रभाव को कम करने के साथ ही चीन की बढ़ती हुई उग्रवादिता को भी प्रभावित करने की दिशा में प्रयत्नशील था। इस प्रकार इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि भारत–पाक संबंध रूस, अमेरिका और चीन की गतिविधियों से प्रभावित हो रहा है।

4. वैचारिक स्तर पर भी दोनों देशों के प्रभावशाली तत्वों में अंतर था। पाकिस्तान में नेतृत्व साम्प्रदायिकता और धार्मिक मद्यान्धता का शिकार था। आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय के बजाए वहां ऐसे तत्वों की प्रधानता थी जो अपने निहित स्वार्थ की रक्षा के दृष्टिकोण से सामन्ती व्यवस्था में मजबूती के लिए बाहरी तत्वों से अधिक सहायता की अपेक्षा करते थे जो उनके प्रति सहानुभूति रखते हो। दूसरी ओर भारत में ऐसे तत्व अधिक प्रबल थे जो धर्मनिरपेक्षता, आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय में विश्वास करते थे। भारत में, समाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण से एक अधिक न्यायोचित व्यवस्था लाने में उनकी दिलचस्पी थी।

5. वस्तुतः यह कह सकते हैं कि आजादी के 65 वर्ष गुजर चुके हैं। अभी तक यह तो माना जाता रहा है कि 1971 के भारत–पाक युद्ध के दौरान अमेरिका ने पाक की मद्द के लिए बंगाल की खाड़ी में नौ सेना का सातवाँ बेड़ा रवाना कर दिया था, लेकिन 1971 के बेहद खुफिया दस्तावेजों से पता चलता है कि अमेरिका की योजना कहीं घातक थी। प्रारम्भ से ही अमेरिकी प्रशासन का ऐसा विश्वास था कि यदि भारत और पाकिस्तान आर्थिक दृष्टि से समृद्धशाली हो जाते हैं तो इस क्षेत्र में विदेशी शक्तियों की उपस्थिति और हस्ताक्षेप दीर्घकाल तक नहीं रह सकेगा।

6. 21वीं (इक्कीसवीं) सदी के परिपेक्ष्य में यह कहना भी गलत नहीं होगा कि ओबामा के प्रशासन में अमेरिकी रीति–नीति में काफी बदलाव आए हैं। और शायद पाकिस्तान के लिए तालिबान अलकायदा का डर दिखाकर सहायता पाना अब उतना आसान नहीं रहा। ये और बात है कि पाकिस्तान पिछले 5 जरवरी को 'कश्मीर–एकता दिवस' का जश्न अधिकारिक रूप से मना ले। परन्तु पाकिस्तान को मानना होगा कि आतंकवाद विरोधी लड़ाई उसकी अपनी लड़ाई है और उसके अपने अस्तित्व की लड़ाई है।

7. प्रस्तुत शोध का विषय 21वीं सदी के परिपेक्ष्य में पुर्नअध्ययन की मांग करता है। चाहे वह ताशकंद समझौता हो, शिमला वार्ता, बांग्लादेश का उत्थान (निर्माण) या अतीत के ऐसे ही कई मुद्दे जो इतिहास के पन्ने में दफन तो नहीं जिन्हें आज के परिपेक्ष्य में पुर्नअध्ययन की आवश्यकता है। 60 साल फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैण्ड अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में आपस में लड़ते–भिड़ते थे। हमें उनके इतिहास से सबक लेनी चाहिए। किसी भी लोकतांत्रिक देश में केन्द्र सरकार और उसकी नीतियों के द्वारा उसकी विदेश नीति को केन्द्र के द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। अतीत से अब तक यह देखा गया है कि केन्द्र सरकार ने अपने विदेश नीति को सैद्धान्तिक तौर पर तो पूर्णतः स्वीकार किया है, किन्तु व्यवहारिक धरातल पर उन सिद्धांतों के रास्ते में आए सत्ता धारी नीतियों की अवहेलना नहीं कर पाया है। अतः भारत–पाक संबंधों का इतिहास आज के दौर में भी तटस्थ निष्पक्ष एवं मौलिक अनुसंधान की मांग करता है। एक ऐसा अनुसंधान जो किसी सताधारी लोकतंत्र का विचारधारा न हो और ना ही विपक्ष में बैठे दलगत विचारधारा का पोषक हो।

8. हमारी राष्ट्रीय विदेश नीति के सैद्धान्तिक पक्ष (विश्व शांति का उद्घोषक) को स्थापित करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण विषय है, जो विश्व शांति के स्थापना का उद्घोषक बनने वाले भारतीय मानसिकता का द्योतक होगा।

9. बेशक कुछ लोग भारत–पाकिस्तान के रिश्तों में बेहतरी नहीं चाहते पर उनके पास विकल्प नहीं है, उनकी समझ को पराजित होना होगा, अभी या कई दशक बाद। दुनिया भर के रिश्तों में बदलाव आ रहा है। वक्त की आवाज सुननी होगी तभी दोनों देश और अधिक समृद्ध और सम्पन्न होंगे। संभव है कि यह व्यापक नजरिया न केवल भारत के लिए बल्कि भारत की विदेश नीति के लिए भी एक सफल प्रयोग होगा। हम हिन्दी और हिन्दूत्व की संकीण भावना के बजाए भारत और भारतीयता के व्यापाक परिपेक्ष्य में भारत–पाक संबंधों का पुर्नअवलोकन करें ताकि भारत–पाक संबंध भविष्य में और अधिक मधुर हो सके। इससे न केवल देश में भारत की एकता, अखण्डता और विश्वशांति, विश्व गुटनिरपेक्षता और विश्व सहअस्तित्व में, विश्व सरकार, विश्व समाज और 'विश्वगुरू' के नाम से विख्यात होकर सम्पूर्ण विश्वजगत् में अपना परचम लहारायेगा। वह दिन दूर नहीं जब एक बार फिर भारत 'सोने की चिड़िया' के नाम से जाना जाएगा।

संदर्भ सूची

1. एस. सी. ओ. आर. एस./628, उद्धृत, डी0सी0 झा, इण्डो पाक रिलेशन्स, पृ. 139–144.
2. एस0सी0ओ0आर0 इयर 4, स्पेशल स्पलीमेंट नम्बर 7 पृ0 21–23, उद्धृत डी0सी0 झा, पृ0–51.
3. गिल एस0एस0 द डायेनेसटी, पृ0 354.
4. लोकसभा डिबेट्स, खण्ड–1, भाग–2,1 मार्च 1954, पृ0 963–974

5. एस0सी0ओ0आर0 761–763 वी मीटिंग (सुरक्षा परिषद् में कृष्ण मेनन का वक्तव्य, जनवरी 1957)
6. जानकी सिन्हा, पाकिस्तान एण्ड द इण्डो यू0एस0 रिलेशन्स, पृ016
7. चेस्टर बोल्स, ''यू0एस0 आर्म्स टू पाकिस्तान, वाशिंगटन पोस्ट, 15 अगस्त 1971
8. जानकी सिन्हा, पाकिस्तान एण्ड द इण्डो यू0एस0 रिलेशन्स, पृ0 20
9. इण्डियन इनपुरमेशन एण्ड 5,1 जनवरी 1963, पृ0 815–816.

अर्जुन बैंठा
शोधकर्ता , इतिहास विभाग , मगध विश्वविद्यालय, बोधगया.